BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA, DELHI – 110034

कक्षा दसवीं 2020-21

प्यारे बच्चों ,

----आज हम स्पर्श भाग -२ में संकलित पाठ कबीर की साखियों के बारे में पढ़ेंगे |

----पाठ्य सामग्री को पढ़ते समय सभी विद्यार्थी निर्देशों का पालन करेंगे |

----पाठ में आए 'पाठ प्रवेश ' को ध्यान से दो बार पढ़ेंगे |

----दिए गए कार्यों को निर्देशानुसार अपनी नोटबुक में करेंगे |

कबीर (साखी)

साखी (कबीर):-

परिचय

'साखी ' शब्द ' साक्षी ' शब्द का ही (तद्भव) बदला हुआ रूप है। साक्षी शब्द साक्ष्य से बना है। जिसका अर्थ होता है -प्रत्यक्ष ज्ञान अर्थात जो ज्ञान सबको स्पष्ट दिखाई दे। यह प्रत्यक्ष ज्ञान गुरु द्वारा

शिष्य को प्रदान किया जाता है। संत (सज्जन) सम्प्रदाय (समाज) में अनुभव ज्ञान (व्यवाहरिक ज्ञान) का ही महत्त्व है

कबीर या भगत कबीर 15वीं सदी के भारतीय रहस्यवादी कवि और संत थे। वे हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन युग में ज्ञानाश्रयी-निर्गुण शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक थे। इनकी रचनाओं ने हिन्दी प्रदेश के भक्ति आंदोलन को गहरे स्तर तक प्रभावित किया। उनका लेखन सिखों के आदि ग्रंथ में भी देखने को मिलता है।

कबीर पंथ नामक धार्मिक सम्प्रदाय इनकी शिक्षाओं के अनुयायी हैं। वे हिन्दू धर्म व इस्लाम को न मानते हुए धर्म निरपेक्ष थे। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों, कर्मकांड, अंधविश्वास की निंदा की और सामाजिक बुराइयों की कड़ी आलोचना की थी।उनके जीवनकाल के दौरान हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उन्हें अपने विचार के लिए धमकी दी थी।

कबीर की रचनाओं में अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं यथा - अरबी, फ़ारसी, पंजाबी, बुन्देलखंडी, ब्रजभाषा, खड़ीबोली आदि के शब्द मिलते हैं इसलिए इनकी भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा जाता है।

----

https://youtu.be/fDPYu0FBZqE

https://youtu.be/ngF88zXnfQ0

सभी विद्यार्थी उपर्युक्त दिए गए लिंक को देखेंगे फिर साखियों को अपनी पुस्तक में से पढ़ेंगे और दोबारा साखियों के अर्थ को लिंक में देखेंगे ।

https://drive.google.com/open?id=0B8hXbvn1ab-BNDRCY0hnZkY2UWM

कबीर (साखी) ⬆

http://ncert.nic.in/textbook/pdf/jhsp1dd.zip

स्पर्श भाग - 2 पुस्तक ⬆

#विद्यार्थी पाठ में आए शब्दार्थ अपनी नोटबुक में करेंगे।

दोहे (अर्थ सहित):-

- **ऐसी बाँणी बोलिए मन का आपा खोई।**
  अपना तन सीतल करै औरन कैं सुख होई।।

अर्थ:-

बात करने की कला ऐसी होनी चाहिए जिससे सुनने वाला मोहित हो जाए। प्यार से बात करने से अपने मन को शांति तो मिलती ही है साथ में दूसरों को भी सुख का अनुभव होता है। आज के जमाने में भी मीठी वाणी का बहुत महत्त्व है। किसी भी क्षेत्र में तरक्की करने के लिए वाक्पटुता की अहम भूमिका होती है।

- **कस्तूरी कुण्डली बसै मृग ढ़ूँढ़ै बन माहि।**
  ऐसे घटी घटी राम हैं दुनिया देखै नाँहि॥

अर्थ:-

हिरण की नाभि में कस्तूरी होता है, लेकिन हिरण उससे अनभिज्ञ होकर उसकी सुगंध के कारण कस्तूरी को पूरे जंगल में ढ़ूँढ़ता है। ऐसे ही भगवान हर किसी के अंदर वास करते हैं फिर भी हम उन्हें देख नहीं पाते हैं। कबीर का कहना है कि तीर्थ स्थानों में भटक कर भगवान को ढ़ूँढ़ने से अच्छा है कि हम उन्हें अपने भीतर तलाश करें।

- **जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि हैं मैं नाँहि।**
  सब अँधियारा मिटी गया दीपक देख्या माँहि॥

अर्थ:-

हमें अपने मन से अहंकार दूर करने का संदेश मिलता है,
जब मनुष्य का मैं यानि अहँ उसपर हावी होता है तो उसे ईश्वर नहीं मिलते हैं। जब ईश्वर मिल जाते हैं तो मनुष्य का अस्तित्व नगण्य हो जाता है क्योंकि वह ईश्वर में मिल जाता है। ये सब ऐसे ही होता है जैसे दीपक के जलने से सारा अंधेरा दूर हो जाता है।

- **सुखिया सब संसार है खाए अरु सोवै।**
  दुखिया दास कबीर है जागे अरु रोवै।।

अर्थ:-

कबीर कहते हैं कि सुखी व्यक्ति वह है जो सिर्फ सांसारिक सुखों में डूबा रहता है , दुनिया मौज मस्ती करने में मशगूल रहती है और सोचती है कि सब सुखी हैं। लेकिन सही मायने में सुखी तो वो है जो संसार की नश्वरता को देख कर रोता है जो दिन रात प्रभु की आराधना करता है।

- **बिरह भुवंगम तन बसै मन्त्र न लागै कोई।**
  राम बियोगी ना जिवै जिवै तो बौरा होई।।

अर्थ:-

जिस तरह से प्रेमी के बिरह (अपने प्रेमी बीच दूर रहने वाला)के काटे हुए व्यक्ति पर किसी भी मंत्र या दवा का असर नहीं होता है, उसी तरह भगवान से बिछड़ जाने वाले जीने लायक नहीं रह जाते हैं; क्योंकि उनकी जिंदगी पागलों के जैसी हो जाती है।

- **निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।**
  बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ॥

अर्थ:-

जो आपका आलोचक हो उससे मुँह नहीं मोड़ना चाहिए। यदि संभव हो तो उसके लिए अपने पास ही रहने का समुचित प्रबंध कर देना चाहिए। क्योंकि जो आपकी आलोचना करता है आपके दोष बतात हैवो बिना पानी और साबुने के आपके दुर्गुणों को दूर कर देता है।

- **पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।**
  एकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ॥

अर्थ:-

मोटी मोटी किताबें पढ़ने से कोई ज्ञानी नहीं बन पाता है। इसके बदले में अगर किसी ने प्रेम का एक अक्षर भी पढ़ लिया तो वो बड़ा ज्ञानी बन जाता है। विद्या के साथ साथ व्यावहारिकता भी जरूरी होती है।

- **हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।**
  अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि॥

अर्थ:-

लोगों में यदि प्रेम और भाईचारे का संदेश फूंकना हो तो उसके लिए आपको पहले अपने मोह माया और सांसारिक बंधन त्यागने होंगे। कबीर जैसे साधु के पथ पर चलने की योग्यता पाने के लिए यही सबसे बड़ी कसौटी है।

विषय -------एक दृष्टि में:-

साखी

|

|

----- कबीर हिंदी निर्गुण भक्तिधारा के प्रमुख कवि है |

----- साखी शब्द साक्षी शब्द का तद्भव रूप है जिसका अर्थ है प्रत्यक्ष ज्ञान

----- उनके द्वारा रचित साखियां प्रमाण है कि सत्य का प्रमाण है कि सत्य का प्रत्यक्ष ज्ञान देता हुआ ही गुरु शिष्य को जीवन के तत्व ज्ञान की शिक्षा देता है |

----- जिस समुदाय से संत कबीर संबंध रखते है उसमें अनुभव ज्ञान की महत्त्ता है |

उद्देश्य एवं संदेश:-

- कबीर के अनुसार हमें ऐसे मधुर वचनों का प्रयोग करना चाहिए जिससे दूसरों को भी सुख का अनुभव हो | उनका मानना है कि ईश्वर प्रत्येक हृदय में विद्यमान है ,किन्तु मनुष्य कस्तूरी के मृग की तरह उसे इधर उधर ढूढंता फिरता है | ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अहंकार को नष्ट करना आवश्यक है और मन को पूर्ण एकाग्र करके की ईश्वर को पाया जा सकता है | ईश्वर को प्राप्त करने के लिए वे सभी प्रकार की वेशभूषा को अपनाने के लिए तैयार है |

- कबीरदास जी कहते है कि सांसारिक लोग विषय -वासना में डूबे रहते है | वे खाने - पीने और सोने में सुख अनुभव करते है किन्तु ज्ञानी व्यक्ति जीवन की नश्वरता को देखकर दुखी रहता है | | ईश्वर के विरह में तड़पने वाला व्यक्ति अत्यंत कष्टमय जीवन व्यतीत करता है | उनका मानना है कि मनुष्य को अपने आलोचकों को भी अपने आस -पास ही रखना चाहिए | वे निंदा करने वाले व्यक्ति के सभी दोषों को दूर कर देते है | उनके अनुसार ग्रंथो को पढ़कर कोई व्यक्ति विद्वान नहीं रह सकता | जो व्यक्ति ईश्वर प्रेम के मार्ग पर चलता है , वही विद्वान् होता है | ईश्वर प्रेम के प्रकाशित होने पर एक विचित्र प्रकाश हो जाता है | उसके बाद तो मनुष्य की वाणी से भी सुगंध आने लगती है |कबीर के अनुसार हमें ऐसे मधुर वचनों का प्रयोग करना चाहिए जिससे दूसरों को भी सुख का अनुभव हो | उनका मानना है कि

ईश्वर प्रत्येक हृदय में विद्यमान है ,किन्तु मनुष्य कस्तूरी के मृग की तरह उसे इधर उधर ढूढंता फिरता है | ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अहंकार को नष्ट करना आवश्यक है और मन को पूर्ण एकाग्र करके की ईश्वर को पाया जा सकता है | ईश्वर को प्राप्त करने के लिए वे सभी प्रकार की वेशभूषा को अपनाने के लिए तैयार है |

- कबीरदास जी कहते है कि सांसारिक लोग विषय -वासना में डूबे रहते है | वे खाने - पीने और सोने में सुख अनुभव करते है किन्तु ज्ञानी व्यक्ति जीवन की नश्वरता को देखकर दुखी रहता है | | ईश्वर के विरह में तड़पने वाला व्यक्ति अत्यंत कष्टमय जीवन व्यतीत करता है | उनका मानना है कि मनुष्य को अपने आलोचकों को भी अपने आस -पास ही रखना चाहिए | वे निंदा करने वाले व्यक्ति के सभी दोषों को दूर कर देते है | उनके अनुसार ग्रंथों को पढ़कर कोई व्यक्ति विद्वान नहीं रह सकता | जो व्यक्ति ईश्वर प्रेम के मार्ग पर चलता है , वही विद्वान् होता है | ईश्वर प्रेम के प्रकाशित होने पर एक विचित्र प्रकाश हो जाता है | उसके बाद तो मनुष्य की वाणी से भी सुगंध आने लगती है |

निम्नलिखित प्रश्नों को सभी विद्यार्थी अपनी हिंदी की नोटबुक में करेंगे।

प्रश्नोत्तर

1- वर्तमान संदर्भ में कबीर की सखियों की क्या उपयोगिता है?

2- मीठी बोली का जीवन में क्या महत्त्व है?

3- कबीर ने किस घर की जलाने की बात की है?

4- कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा गया है?

5- सच्चा ज्ञान क्या है कबीर के दोहों के आधार पर बताइए।

6- कबीर ने निंदक को अपना सबसे बड़ा शुभचिंतक क्यों कहा है?

---------------------------------------x---x--

नोट -
'अपठित ' शब्द का अर्थ है - जो कभी पढ़ा न गया हो | अपठित गद्यांश देकर उस पर भाव - बोध संबंधी प्रश्न पूछे गए है इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को उसी गद्यांश के आधार पर देने है | उत्तर देते समय ये कोशिश होनी चाहिए कि उत्तर में गद्यांश के वाक्यों को जैसा का तैसा न उतारा जाए बल्कि उसमें कही गई बात को अपने शब्दों मै व्यक्त किया जाये |

अपठित गद्यांश कक्षा दसवीं

हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिहन है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम-से-उत्तम वस्तु एक बार हँस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी-से-अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हँसो और पेट फुलाओ। हँसी न जाने कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों को झीखने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाक्रीटस 109 वर्ष तक जिया। हँसी-खुशी का नाम जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है-'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल खाक जिया करते हैं।'

मनुष्य के शरीर के वर्णन पर एक विलायती विद्वान ने एक पुस्तक लिखी है। उसमें वह कहता है कि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है कि उससे शोक और दुख की दीवारों को ढा सकते हैं। प्राण रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम-से-उत्तम उपाय मनुष्य के चित्त को प्रसन्न रखना है। सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंदरूपी मंत्र सुनाता है। एक अंग्रेज डॉक्टर कहता है कि किसी नगर में दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है। डॉक्टर हस्फलेंड" ने एक पुस्तक में आयु बढ़ाने का उपाय लिखा है। वह लिखता है कि हँसी बहुत उत्तम चीज पाचन के लिए है, इससे अच्छी औषधि और नहीं है। एक रोगी ही नहीं, सबके लिए हँसी बहुत काम की वस्तु है।

हँसी शरीर के स्वास्थ्य का शुभ संवाद देने वाली है। वह एक साथ ही शरीर और मन को प्रसन्न करती है। पाचन-शक्ति बढ़ाती है, रक्त को चलाती और अधिक पसीना लाती है। हँसी एक शक्तिशाली दवा है। एक डॉक्टर कहता है कि वह जीवन की मीठी मदिरा है। डॉ. हयूड कहता है कि आनंद से बढ़कर बहुमूल्य वस्तु मनुष्य के पास और नहीं है। कारलाइल एक राजकुमार था। संसार त्यागी हो गया था। वह कहता है कि जो जी से हँसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हँसी, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हँसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हँसाओ, तुमसे कम घृणा करेगा। एक अनजान को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ, उसका दुख घटेगा। निराश को हँसाओ, उसकी आशा बढ़ेगी।

(क) पुराने समय में लोगों ने हँसी को महत्व क्यों दिया?
(ख) हेरीक्लेस और डेमाक्रीटस के उदाहरण से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहता है?
(ग) किसी डॉक्टर ने हँसी को जीवन की मीठी मदिरा क्यों कहा है?
(घ) इस गदयांश में हँसी का क्या महत्व बताया गया है?
(ङ) गदयांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए।